आसमान के आँसू

काँपते एक सन्नाटे में, चाँदनी जब करती राज,
सोता दिल, पर मन में क्यूँ बना एक ग़म का मिजाज!
धड़कन धीमी होकर बोली खुद-ही-खुद से कुछ अलफ़ाज़,
उठी यह बेबस दिल से, आहिस्ता एक नम आवाज़।

आँखों की यह नमी में छलकतीं, ओस यूँ बरसने लगी,
बूँदों से भीगे नैना मेरे, अचानक कुछ ऐसे जगी,
जब खिड़की से बाहर, दूर फलक, चाँदनी में रोने लगी।
लेकिन भीगे पत्तों की गोद में, गिरकर भी सजने लगी।

सवेरे चमककर, रात में रोती आसमान की है यह मलाल,
किंतू ना किसीसे गुस्सा, ना है उसको कोई जलाल।
दर्द अपने रात को देकर, सुबह जगने का है यह हाल,
यह बूँदे कहती मुझसे- नई सुबह में लाओ नए खयाल।

पत्तों में लिपटे नाज़ुक से हैं यह सुन्दर मोती,
भूलकर मगरूर दुनिया को, बस उनमें मैं खोती।
उस अनोखे लमहे में, कसम ज़िन्दी से मैं खाती,
और, यादों में बसे ग़म को, हँसी के धागों में, मैं बुनती।

ठंड में ओस की यह बरसात, है मौसम की एक रिवायत,
खुदके गोद में इनको सहलाती, हरियाली की दिखती इनायत।
महसूस होती खुशी की लहर, जब देखती उनकी नज़ाकत,
क्यूँ बढ़ती इन बूँदों से, मेरी यह अजीब सी कुश्वत।

दरिया हो तुम, फिर क्यूँ हो प्यासे?
भटको मत, जानो खुशी मिलती तुम्हें कहाँ से,
मंज़िल वहीं तुम्हारी, स्थिता तुम्हारा है जहाँ से।